Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, P-ISSN: 3049-172X, Volume 2 | Issue 2 | (Apr – Jun 2025)

एकभाषी से बहुभाषी समाज की यात्रा : प्रवासी भारतीयों की भूमिका

कु० आशा मद्धेशिया [1], डॉ० पूनम सिंह [2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, सीतापुर

शोध-सार:-

प्रवासी साहित्य एवं भाषा के संदर्भ में सामाजिक-भाषाविदों ने बताया है कि समय परिवर्तनशील होने के कारण भाषा में अनिवार्य रूप से परिवर्तन होंगे। दूसरी तरफ, समकालीन समूदायों के द्वारा प्रत्यक्ष शिक्षण के साथ- साथ इंटरनेट के माध्यम से अभिनव शिक्षण कार्यक्रमों को अपनाकर पैतृक भाषा के उपयोग को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है। एकभाषी से बहुभाषी समाज की यात्रा में बॉलीवुड की वैश्विक पहुँच भी एक महत्वपूर्ण कारक है जिस पर विचार किया जाना चाहिए क्योंकि यह एक भाषा के रूप में हिंदी से परिचित होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिंदी भाषा अनेक भाषाओं को अपने साथ समाहित करती है। समय-समय पर हिंदी भाषा एवं साहित्य लेखन में अनेक साहित्यकारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी का अमूल्य योगदान है। इस संदर्भ में वागर्थ (पत्रिका) के अंक – 334, में उल्लेखनीय है कि "हिंदी के सांस्कृतिक विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्व कई तरह से है। वे साहित्यिक लेखक, विचारक, संपादक, वैयाकरण, भाषाशास्त्री, आर्थिक चिंतक आदि के रूप में विभिन्न दिशाओं में कार्य करने वाले मनीषी थे। यह बहुमुखी व्यक्तित्व नवजागरण काल के सर्जकों की सामान्य विशेषता थी। इस दृष्टि से आचार्य द्विवेदी ने हिंदी के बौद्धिक मानस के निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाई। उन्होंने एक तरफ हिंदी को जातीय पहचान दिलाई दूसरी तरफ बंगाली और मराठी के उदाहरण से हिंदी जाति को भारतीयता की चेतना दी। द्विवेदी जी से पहले भारतेंदु और उनके सहयोगियों ने गद्य में खड़ी बोली को प्रतिष्ठित कर दिया था। द्विवेदी जी के सामने चुनौती थी गद्य के साथ काव्य की भाषा के रूप में खड़ी बोली को स्थापित करने की। यह संघर्ष भी उन्होंने साहस और सफलतापूर्वक किया।

बीज-शब्द:- प्रवासी साहित्य, अंत:-संबंध, सामाजिक पृष्ठभूमि, बहुभाषिकता, ऐतिहासिक, परिवर्तनशील, मातृभाषा।

शोध-विस्तार:-

'प्रवास' शब्द का अर्थ : अपनी जगह को छोड़कर अन्यत्र वास करना। "किसी दूसरे देश या बेगानी धरती पर वास करने वाला व्यक्ति प्रवासी होता हैं"[1] तथा उसके द्वारा लिखा गया साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है। प्रवासी भारतीय साहित्यकारों की मूल भाषा हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगू, मलयालम, बांग्ला एवं भोजपुरी भाषा से प्रभावित है। प्रवासी भारतीय विश्व के अनेक देशों में जाकर निवास करने लगे तथा अपनी एवं पाश्चात्य देशों की भाषा में साहित्य के माध्यम से सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करने लगे।

जब हम प्रवासी साहित्य के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में अध्ययन करते हैं तो यह पाते हैं कि विशेष रूप से, गिरमिटिया श्रम की योजना के तहत पश्चिमी बिहार, संयुक्त प्रान्त, साथ ही मद्रास प्रेसीडेंसी जैसे क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोगों को भेजा गया था। भारत के पूर्वी क्षेत्रों से आए प्रवासी भोजपुरी, अवधी और मैथिली की विभिन्न बोलियों का प्रयोग करते थे जबकि दक्षिण भारत से आए प्रवासी तमिल और तेलुगु भाषा बोलते थे।

प्रवास की प्रक्रिया के अगले चरण में, 20वीं शताब्दी में, अनेक भारतीय मूल के लोग (पंजाबी एवं गुजराती) ब्रिटेन, अफ्रीका, कनाडा, और अमेरिका, मॉरीशस और फिजी आदि अनेक देशों में प्रवास कर गये। 'भारतीय प्रवासियों में भाषा की गतिशीलता : त्रिनिदाद में भोजपुरी/हिंदी का मामला' शीर्षक वाले अपने निबंध में, एन. जयराम बताते हैं कि विभिन्न प्रवासी समुदाय अपने सामाजिक-सांस्कृतिक बोझ के हिस्से के रूप में जिन भाषाओं को लेकर चलते हैं, उनकी स्थिति अत्यधिक परिवर्तनशील है। वह बताते हैं कि ये भाषाएं क्षयग्रस्त हो गईं और पूरी तरह से गायब हो गईं, या वे जीवन के अत्यंत सीमित क्षेत्रों में बची रहीं, या उन्हें संशोधित करके बनाए रखा गया। वह बताते हैं कि कैसे जमैका जैसे स्थान पर, भारतीय प्रवासियों ने अपनी पैतृक आषाओं को खो दिया है जबकि दूसरी ओर मॉरीशस, फिजी और सूरीनाम जैसे स्थानों पर, औपचारिक क्षेत्रों में भोजपुरी की एक स्थानीय बोली का उपयोग किया जाता है और धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में मानक हिंदी।

प्रवासी साहित्यकारों के समक्ष निरंतर आने वाली चिंता 'मातृभाषा' को बनाए रखने की आवश्यकता है क्योंकि भाषा का नुकसान सांस्कृतिक जड़ों के नुकसान से जुड़ा हुआ है। एक दिलचस्प तकनीकी उद्भव इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं की एक श्रृंखला की उपलब्धता है जो अब प्रवासी लोगों के बीच उनकी मूल भाषाओं में संचार के लिए एक आसान मंच प्रदान करता है और शुरुआती लोगों के बीच इन भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देने का अवसर भी प्रदान करता है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार "विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरा स्थान हिन्दी का है। प्रवासी भारतीयों के माध्यम से अब इन आंकडों में वृद्धि हो रही है। आज भारत के अलावा कई देशों में हिन्दी संपर्क की भाषा है। प्रवास में हिन्दी प्रेमी हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए जी तोड़ मेहनत करते हैं। इसके फलस्वरूप कई संस्थाएँ संचालित हुईं। वर्तमान में इन संस्थाओं के माध्यम से पूरे संसार में 'हिन्दी' फैल रही है।"[2] विश्व के अनेक देशों में स्कूल, कॉलेज, मीडिया आदि हिन्दी में रुचि उत्पन्न करने के लिए रेडियो, टेलीविजन एवं पत्र-पत्रिकाओं का प्रयोग कर रहे हैं।

भारत और बांग्लादेश दोनों देशों के लेखक जो प्रवासी समुदाय में बांग्ला भाषा बोलते हैं और रचनात्मक रूप से उससे जुड़ते हैं, उनकी संख्या विशेष रूप से यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में बढ़ रही है। बंगाल के पुनर्जागरण ने कई कुलीन बंगालियों को समुद्र पार खतरनाक यात्राएं करने के लिए प्रेरित किया। राजाराम मोहनराय, द्वारकानाथ टैगोर, देवेन्द्रनाथ टैगोर, माइकल मधुसून दत्त, रवीन्द्रनाथ टैगोर और उनके कई समकालीन को उनके परिवारों ने कानून, चिकित्सा की पढ़ाई करने या सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने और उसमें शामिल होने के लिए इंग्लैण्ड भेजा था। भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए यू.के. में गुजरात साहित्य अकादमी जैसी संस्थाएँ पाठ्यक्रम सामग्री और पाठ्य पुस्तकें तैयार करने में सक्रिय रूप से शामिल रही हैं। बिहार और पूर्वी उत्तर-प्रदेश के गिरमिटिया मजदूर अन्य देशों के अलावा मॉरीशस, त्रिनिदाद, टोबैगो, फिजी, सूरीनाम और गुयाना में चले गए। चूंकि बड़ी संख्या में मजदूर केवल भोजपुरी बोलते और

समझते थे, यह एक संपर्क भाषा बन गई। हालाँकि, समय के साथ यह बोली अत्यधिक स्थानीय हो गई और भारत में बोली जाने वाती भोजपुरी की बोली से अलग हो गई। दूसरी ओर, हिन्दी को मिशनरियों द्वारा बढ़ावा दिया गया और प्रशासन ने स्कूलों को मानक हिंदी में शिक्षा देने के लिए प्रोत्साहित किया। हिंदी भाषा में प्रारंभिक प्रकाशनों का पता 1918 के आस-पास लगाया जा सकता है, जब धार्मिक कार्यकर्ता धार्मिक सभाओं के लिए हस्तलिखित पुस्तिकाएं वितरित करते थे। 1940 के बाद, आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने हिंदी भाषा और साहित्य के प्रयोग को बढ़ावा दिया। ये पुस्तकें और पत्रिकाएँ शुरु में हिंदी में हस्तलिखित थीं और फिर साइक्लोस्टाइल की गईं। सूरीनाम के महत्वपूर्ण लेखकों में पंडित लक्ष्मीप्रसाद बलदेव, मुंशी रहमान खान और बाबू चंद्रमोहन रणजीत सिंह शामिल हैं। सूरीनाम से हिंदी में 'प्रकाश' और' विकास' नामक दो हिंदी पत्रिकाएं भी प्रकाशित हुई हैं।

फिजी प्रशांत महासागर में बसा एक छोटा सा देश है। फिजी की लगभग आधी आबादी भारतीय है। ये भारतीय उन्नीसवीं सदी में उत्तर-प्रदेश और बिहार में अनुबंध पर यहाँ आए थे और अवधी, मैथिली और भोजपुरी बोलियाँ बोलते थे। फिजी में पहली से दसवीं कक्षा तक हिंदी पढ़ाई जाती है। इसके अलावा, साउथ पेसिफिक यूनिवर्सिटी, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज और सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा आदि में भी हिंदी पढ़ाई जाती है। फिजी के महत्वपूर्ण हिन्दी लेखकों में पं. कमला प्रसाद मिश्र, डॉ० मणिलाल, शिवदत्त शर्मा, बाबू रामसिंह, श्रीकृष्ण शर्मा, ज्ञानीदास, रामखिलावन आदि शामिल हैं। फिजी से कई हिंदी पत्रिकाएं प्रकाशित हुई है। उनमें मुख्य रूप से सेटेलर (1913), फिजी समाचार (1923), वैदिकसंदेश (1930), शांतिदूत (1935), किसान (1940), झंकार (1953), जय फिजी (1960) आदि ।

विगत तीन दसकों में अमेरिका में भारतीय प्रवासियों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है। 20वीं सदी में कई आईटी इंजीनियर और मेडिकल डॉक्टर बड़ी संख्या में अमेरिका चले गए। अमेरिका में बढ़ती भारतीय आबादी की जरुरतों को समझते हुए, अमेरिका के अधिकांश विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में हिंदी पढ़ाना शुरु कर दिया गया है। वर्तमान में अमेरिका में सैकड़ों विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में हिंदी भाषा पढ़ाई जाती है। डॉ० सुषम वेदी, सुधा ओम ढींगरा अनेक विधाओं में लिखती है और 'हिंदी चेतना" नाम से एक हिंदी पत्रिका भी प्रकाशित करती हैं। अनीता कपूर कविताएँ लिखती है तथा अपने साहित्यिक लेखन और हिंदी पत्रकारिता के लिए विख्यात हैं। अमेरिका के समान ग्रेट ब्रिटेन में भी कई हिंदी लेखक हैं जो हिंदी साहित्य के विभिन्न रूपों में योगदान देते हैं। ब्रिटेन में प्रवासी भारतीय मूल के हिंदी लेखकों में मुख्यत: सत्येंद्र श्रीवास्तव, तेजिंदर शर्मा, कविता बाचकनवी, अर्चना पन्यौली, दिव्या माथुर आदि हैं।

खाड़ी देशों में भी हिन्दी की अनेक उपभाषाओं का व्यापक स्तर पर प्रयोग किया जा रहा है। अनुधाबी में रहने वाले कृष्ण बिहारी कविताएँ, कहानियाँ और उपन्यास आदि अनेक विधाओं में रचना करते हैं। यूएई में रहने वाली पूर्णिमा वर्मन गद्य के लिए “अभिव्यक्ति" और कविता के लिए "अनुभूति" नामक दो हिंदी साहित्यिक पोर्टल होस्ट कर रही हैं। कनाडा से सरन घई "विश्व हिंदी संस्थान” नाम से एक हिंदी ब्लॉग चलाते हैं, जिसमें वह अपनी रचनाओं के साथ अन्य लेखकों की रचनाओं को भी शामिल करते हैं।

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। "भाषा मानव मन की भावनाओं को अभिव्यक्त करने का माध्यम है साथ ही एक-दूसरे को जोड़ने का भी। परस्पर दु:ख-सुख, आशा-आकांक्षाओं, आचार-विचार, वेष-भूषा, ज्ञान-विज्ञान, कला, विभिन्न प्रकार की भाव, संस्कृति तथा समस्त चिंतन भाषा में ही संभव है।"[3] साहित्यकार की सरल भाषा के कारण ही पाठक आसानी से उसकी रचना से बंध पाते हैं।

'वैश्विक रचनाकार: कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ' नामक पुस्तक में अमेरिका के पुराने रचनाकारों में से एक वेद प्रकाश वटुक' का नाम उल्लेखनीय है। अमेरिका में रचे जा रहे हिन्दी साहित्य में इनका विशेष योगदान रहा है। उनका एक वक्तव्य है- "उस समय भारतीयों की संख्या पूरे अमेरिका में बीस हजार के करीब होगी। आज की तरह तीस लाख नहीं। उनमें पंजाबी किसान और श्रमिक ही अधिक थे। स्पुतनिक छोड़े जाने से अमेरिकन सरकार चिंतित थी और सुरक्षा के नाम पर विशिष्ट 'उपेक्षित' भाषाओं के विद्वान तैयार कसे का निश्चय किया गया। बड़े-बड़े अनुदान देकर विश्वविद्यानों में हिंदी, उर्दू, तमिल आदि पढ़ने की व्यवस्था शुरु की गई।"[4]

भारतीय भाषा परिषद् की मासिक पत्रिका 'वागर्थ' में सितंबर 2023, अंक 334 में भाषा के संदर्भ में उल्लेख किया गया है कि- "उपनिषद में भाषा को 'मन की नहर' कहा गया है। वह मानव चित्त का प्रतिबिंब होने के अलावा संपूर्ण सभ्यता का प्रतिबिंब है। हम जो बोलते हैं, उसमें इसकी झलक होती है कि समाज किस तरफ जा रहा है। खासकर बहस की भाषा से सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास की दिशा का बोध हो सकता है। हमारा ध्यान इस ओर जाना चाहिए कि इन दिनों सार्वजनिक अभिव्यक्ति में अपशब्दों के बढ़े प्रयोग के कारण भाषा कैसी होती जा रही है।"[5]

हिन्दी भाषा का प्रश्न केवल हिंदी भाषा को अपनाने और अंग्रेजी भाषा का महत्व बताने तक सीमित नहीं है बल्कि इससे सम्बन्धित है कि हम अपनी भाषा में किस प्रकार रुचि, विचार और अधिगम (ज्ञान) की रचना कर रहे हैं। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'नया ज्ञानोदय', जून-जुलाई 2024, 'प्रवासी स्त्री लेखन पर केन्द्रित' पत्रिका में पृष्ठ सं. 54 पर नागार्जुन जी की एक वक्तव्य उल्लेखनीय है-"क्लासिक्स पढ़ें। अब क्या है कि कुछ लोग आँख मूँद कर बाहरी चीजें पढ़ते हैं। अपने देश के क्लासिक्स को, अपने देश में जो अलग-अलग पीरियड में बडे-बडे लेखक हुए हैं, उनको, पढ़ना चाहिए। पहले क्या था कि लोग अपनी भाषा के अलावा एक दो भाषा और जानते थे। हर हिंदीवाला बंगला जानता था, उर्दू में गहरायी से रुचि रखता था।"[6]

निष्कर्ष:-

अत: निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि प्रवासी साहित्य में एक भाषी से बहुभाषी समाज की यात्रा दृष्टिगत होती है। प्रवासी साहित्य में दो देशों की विभिन्न भाषाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने की अद्वितीय सफल कोशिश की गयी है। जिसके माध्यम से हम अनेक देशों के सभ्यता एवं संस्कृति को आसानी से साहित्य का अध्ययन करके जान पाते हैं। नया ज्ञानोदय पत्रिका जून-जुलाई, 2024, अंक- 227 में भाषा के संदर्भ में यह उल्लेख किया गया है कि "अमेरिकी शिक्षा पद्धति में भाषा संबंधी प्रामाणिक सामग्री उसे कहा जाता है जो भाषा के मूल सांस्कृतिक परिवेश में तैयार किए गए हों, जिनका प्रयोग शिक्षा प्रदान करने के लिए नहीं, बल्कि अन्य उद्देश्यों के लिए किया गया हो। उदाहरण के लिए समाचार पत्रों के विज्ञापन या अख़बारों में छपे विज्ञापन,

फिल्मी या अन्य गीत आदि प्रामाणिक सामग्री की श्रेणी में आते हैं। युवा हिंदी संस्थान- न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय फुल ब्राइट-हेस जी पी ए पाठ्यक्रम निर्माण परियोजना के प्रतिभागियों के लिए आवश्यक है कि वे 'अध्ययन दौरे' के दौरान संग्रहालय प्रतियां, स्थानीय लोगों से बातचीत के ऑडियो, वीडियो या लिखित पाठ तथा अन्य प्रतीकात्मक वस्तुओं का संग्रह करें, ताकि वे उनका उपयोग अमेरिका लौटकर पाठ्यक्रम या अन्य शिक्षण सामग्री के रूप में कर सकें।"[7] अतः वर्तमान में अनेक माध्यमों के द्वारा अनेक भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया जा सकता है जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका मीडिया और साहित्य की है।

संदर्भ सूची-

1. वागर्थ, प्रवासी कहानियां, हिन्दी नवजागरण और महावीर प्रसार द्विवेदी का युग, संपादक- शंभूनाथ, वर्ष- 29, अंक- 334, सितंबर-2023, भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका, पृष्ठ सं. -79-88
2. डॉ० सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में अभिव्यक्त तथा निहित समस्याएँ, निधिराज भड़ाना, रेशू पाण्डेय, पृष्ठ सं.-16
3. प्रवासी भारतीय की समस्याएँ एवं संवेदनाएँ (सुधा आम ढींगरा की कहानियों के विशेष संदर्भ में), प्रसीता पी, पृष्ठ सं.-23
4. सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में प्रवासी जीवन, शहनाज, पृष्ठ सं०-132
5. वैश्विक रचनाकार: कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ, सुधा ओम ढींगरा, पृष्ठ सं.-15
6. वागर्थ, प्रवासी कहानियां, हिन्दी नवजागरण और महावीर प्रसार द्विवेदी का युग, संपादक- शंभूनाथ, वर्ष- 29, अंक- 334, सितंबर-2023, भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका, पृष्ठ सं. -5
7. नया ज्ञानोदय (पत्रिका), प्रवासी स्त्री लेखन पर केन्द्रित, भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित, संपादक: मधुसूदन आनंद, सह संपादक-महेश्वर, प्रभाकिरण जैन, अंक-227, जून- जुलाई: 2024, पृष्ठ सं०-54